IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महात्मा गांधी के विचार का अवलोकन

डॉ महेन्द्र प्रताप तिवारी,
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग,
बजरंग महाविद्यालय, कुण्डा, प्रतापगढ़।

सारांशः– युग प्रवर्तक महात्मा गांधी का संपूर्ण जीवन सत्य, अहिंसा एवं नैतिकता के प्रयोग में अभिव्यक्त हुआ है। सत्य एवं अहिंसा को परमतत्त्व स्वरूप मानने वाले महात्मा गांधी के विचार परमात्मा की अंतःप्रेरणा, सत्य की शाक्ति, अहिंसा की क्षमता तथा प्रार्थना से उत्पन्न शांति का हिमायती है। उनके विचार का लक्ष्य एक ऐसे मानव समाज का निर्माण करना है जो सर्वोदय की भावना से अनुप्राणित होता हो। ऐसे समाज में निर्धन वर्ग का भौतिक उत्थान तथा संपन्न वर्ग का नैतिक उत्थान होगा। उपयोगितावाद के सीमित लक्ष्य से बढ़कर गांधी जी की विचारधारा का लक्ष्य संपूर्ण समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का समग्र कल्याण करना है। यह पवित्र लक्ष्य पवित्र साधनों के रूप में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अभय, अस्पृश्यता निवारण, शारीरिक श्रम, सर्वधर्म समभाव आदि व्रतों के सम्यक् पालन से ही प्राप्य है। इन व्रतों में सत्य–अहिंसा ही चरम तत्त्व हैं तथा शेष सभी व्रत इन्हीं व्रतों से ऊद्भूत एवं पल्लवित होते हैं। गांधीजी के राज्य एवं शासन का विचार वर्तमान में राज्य के हिंसात्मक स्वरूप को अहिंसात्मक साधनों से अहिंसात्मक स्वरूप प्रदान करने का हिमायती है। अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह की पद्धति नूतन सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना का आधार है। अहिंसा केवल एक दार्शनिक सिद्धांत नहीं है, अपितु जीवन का ताना–बाना एवं हृदय परिवर्तन का आधार है। उनके अनुसार राज्य और समाज में सर्वत्र एक ही सामुदायिक भावना होगी जो शोषण विहीन, अस्पृश्यता की भावना से अनुप्राणित होगा। गांधी जी के अहिंसक राज्य में शासक तथा दण्ड की आवश्यकता न्यूनतम होगी तथा ऐसे समाज में आर्थिक–सामाजिक समानता होगी एवं राज्य की प्रकृति विकेन्द्रीकृत जनतांत्रिक ग्रामीण 'सत्याग्रही समुदायों का संघ' होगा। 'सत्याग्रही समुदायों' में आत्मनियंत्रण, अनुशासन एवं सामंजस्यवादी प्रवृत्ति की प्रधानता होगी। अतः ऐसी राजव्यवस्था में अहिंसा तथा विकेन्द्रीकरण दो ऐसे आधार स्तम्भ हैं। पुनश्च, सभी धर्म परमतत्त्व की प्राप्ति के मार्ग हैं तथा कोई भी धर्म दूसरे किसी भी धर्म से श्रेष्ठतर नहीं है। धर्म और नैतिकता में कोई भेद नहीं है। धर्म 'रिलीजन' न होकर 'नैतिकता' का सारतत्त्व है।

संकेत शब्दः– धर्म, नैतिकता, सत्य, अहिंसा, सर्वोदय, सत्याग्रह, उपयोगितावाद, विकेन्द्रीकरण, पवित्र लक्ष्य, पवित्र साधन, सत्याग्रह, हृदय परिवर्तन, सामुदायिक भावना।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी कहते हैं कि मानव जीवन में पूर्णता की प्राप्ति असम्भव है। ज्यों–ज्यों हम जीवन में आगे बढ़ते–जाते हैं, लक्ष्य भी उतना ही आगे बढ़ जाता है। संतोष प्रयास में है, न कि प्राप्ति में। पूर्ण प्रयत्न ही पूर्ण विजय है। साधन साध्य के औचित्य का विधाता है। जहाँ उपयोगितावादी साध्य की प्राप्ति को येन केन प्रकारेण प्रयास की वकालत पर बल देते हैं, वहीं महात्मा गांधी का मानना है कि पवित्र साधन से पवित्र साध्य की प्राप्ति को ही नैतिक कहा जा सकता है। नैतिक एवं धार्मिक जीवन में मानव को अधिकार की चिन्ता न कर सत्यनिष्ठा से कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। सत्याग्रह के कानून का उद्भव कर्त्तव्य पालन की पूर्ण समझ और उससे पैदा होने वाले अधिकारों से उत्पन्न होगा। मनुष्य तब तक दूसरे को सुधार नहीं सकता जब तक वह स्वयं को सुधार न ले। बिना आचार के कोरा बौद्धिक ज्ञान खुशबूदार मसाला युक्त मुर्दे के समान है। मानव जीवन का लक्ष्य आत्म–दर्शन है तथा आत्म–दर्शन की सिद्धि का एकमात्र उपाय पारमार्थिक भाव से जीव मात्र की सेवा करना है। सर्वत्र सत्य का दर्शन करना ही अद्वैत की सिद्धि है। 'सत्य ही ईश्वर है' का तात्पर्य है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड में परमतत्त्व के रूप में सत्य ही अनुप्राणित हो रहा है। सत्य की सिद्धि में अहिंसा सर्वोच्च सक्रिय शक्ति है।

आध्यात्मिक–धार्मिक विचार

गांधीवाद जीवन के सभी पहलुओं की दार्शनिक दृष्टि से गवेषणा करता है। ऐसी दार्शनिक दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि आध्यात्मिक है, जैसे– सत्य और ईश्वर में तादात्म्य स्वीकार करना, जगत् को ईश्वर की अभिव्यक्ति मानना, आत्मतत्त्व के साक्षात्कार को मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानना, प्रेममय अहिंसा रूपी साधन से ही सत्य के साध्य की प्राप्ति को स्वीकार करना आदि। धर्म मनुष्य के अंतःकरण में निहित स्थायी तत्त्व है जिसमें कट्टरता, रूढ़िवादिता, धर्मान्धता आदि नकारात्मकता का सर्वथा अभाव होता है। सनातन धर्म में उदारता एवं सहिष्णुता का अर्थ है– सर्वधर्म समभाव। मानव सीमित है और उसकी कल्पनाओं पर आधारित धर्म भी सीमित हैं। दूसरे शब्दों में सभी धर्म उपादेय होते हुए भी अपूर्ण हैं। ऐसे में समग्र मानवता के कल्याणार्थ सभी धर्मों में सामंजस्य नितांत आवश्यक है। बुराई धर्म में न होकर अनुयायियों की धार्मिक व्याख्या में हो सकता है। अद्वैतवाद के समर्थक गांधीजी का समस्त चिंतन अहिंसा एवं सत्य में तादात्म्य का उद्घोष है तथा राजनीतिक बुराई के शमन के लिए धर्म एवं आचार को एक अंकुश के रूप में मानते हैं। साम्यवादियों के विपरीत गांधीवादी दर्शन बुरे साधन को पवित्र साध्य के लिए आवश्यक न मानकर पवित्र साधन के रूप में सत्याग्रह और अहिंसा को पवित्र साध्य सर्वोदय के लिए आवश्यक मानता है। समाज में आर्थिक शोषण को समाप्त कर आर्थिक समानता हेतु अपरिग्रह, न्यास सिद्धान्त, भूदान, ग्राम दान आदि पवित्र साधनों को अपना कर बिना हिंसा के हृदय परिवर्तन के पवित्र साध्य को प्राप्त करना गांधीवादी उच्च आध्यात्मिक विचार से ही संभव है।

वस्तुतः गांधी जी का दर्शन एक पूर्णतावादी जीवन दर्शन की धारा है जिसमें धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि जीवन के विविध पहलुओं पर अद्वैतवाद की अमिट छाप है। यदि यह कहें कि महात्मा गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन उनके दर्शन की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है तो अतिशयोक्ति नहीं होगा। समाज के सभी वर्गों का कल्याण सत्य और अहिंसा पर आधारित साधन–साध्य की पवित्रता द्वारा पुष्पित एवं पल्लवित है। सत्य एवं अहिंसा के अनुपालन से मानव मात्र में सह–अस्तित्व के विचार को मूर्त्त रूप में साकार कर विश्व शांति का अलख जगाया जा सकता है। संपूर्ण मानवता की आत्मा में ही ईश्वरानुभूति संभव है। दूसरों के साथ प्रेम एवं कर्त्तव्य की भावना रखना ही ईश्वरानूभूति, नैतिकता एवं धर्म का सच्चा मार्ग है।

आर्थिक विचार

महात्मा गांधी जी की विचारधारा का लक्ष्य एक ऐसे समाज का सृजन करना है जिसमें सभी व्यक्तियों उदय हो सके। संपन्न वर्ग में नैतिक गिरावट और विपन्न वर्ग में भौतिक गिरावट दृष्टिगोचर होता है। यदि धनी वर्ग अपनी आवश्यकता से अधिक संपत्ति का त्याग कर दे ंतो उनका नैतिक उत्थान हो जएगा। दूसरी ओर वंचित वर्ग की रोटी–कपड़े आदि के रूप में आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी। महात्मा गांधी का विचार आर्थिक विकेन्द्रीकरण का पोषण करता है। सामान्यतः भारी औद्योगीकरण को अनुचित मानते हुए महात्मा गांधी उद्योगों के विकेन्द्रीकरण के हिमायती हैं। उद्योगों में ऐसा मशीनीकरण ही उचित है जो जनसाधारण को लाभ दे सके। भारी उद्योगों की व्यवस्था उसी क्षेत्र में हो जहाँ मानव श्रम के नियोजन की न्यूनतम् सम्भावना हो। उनका 'रोटी के लिए श्रम' का सिद्धान्त इस बात का समर्थक है कि ऐसे व्यक्ति को खाने का बिल्कुल भी अधिकार नहीं है जो श्रम ही नहीं करते हैं। श्रम के बिना रोटी खाना अस्तेय व्रत का उल्लंघन है, अर्थात ऐसे में रोटी खाना चोरी है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन थोड़ा–बहुत शारीरिक श्रम अवश्य करना चाहिए। दूसरे शब्दों में केवल मानसिक श्रम ही पर्याप्त नहीं है। साक्षर–निरक्षर, चिकित्सक–वकील, नाई–भंगी आदि सभी को उनके कार्य हेतु बराबर पारिश्रमिक मिलना चाहिए। प्रत्येक अपनी योग्यतानुसार कार्य करे तथा आवश्यकतानुसार प्राप्त करे। पुनश्च, गांधीवादी आर्थिकी ग्राम पंचायत स्तर पर लधु एवं कुटीर उद्योग का समर्थक है जिससे अधिक से अधिक रोजगार का सृजन हो सके। न्यास सिद्धान्त में गांधी जी कहते हैं कि पूँजीपतियों को चाहिए कि वे अपनी सम्पत्ति को न्यास में परिवर्तित कर स्वयं को उस न्यास के संरक्षक की भूमिका के रूप में स्थापित करें। ऐसा करने से पूँजीपतियों का नैतिक उत्थान होगा तथा न्यास की सुविधाओं का उपयोग कर गरीबों–मजलूमों के भौतिक उत्थान में मदद मिलेगी। इस प्रकार पूँजीपतियों द्वारा अपरिग्रह और अस्तेय व्रत का संभव हो सकेगा।

राजनीतिक–सामाजिक विचार

महात्मा गांधी के लिए राज्यविहीन लोकत्रांतिक व्यवस्था से रामराज्य का उद्भव होगा। ऐसी शासन व्यवस्था का रूप विकेन्द्रीकृत, स्वचालित एवं स्वनियंत्रित होगा तथा संप्रभुता जनता में निहित होगी। ऐसी शासन व्यवस्था ग्रामीण गणतंत्रों की विकेन्द्रीकृत संघात्मक व्यवस्था के रूप में होगी, जिसमें ग्राम का प्रत्येक सदस्य सार्वजनिक मामलों के प्रबंधन में सक्रिय भाग लेगा। ऐसी पंचायती राजव्यवस्था की मूलभूत इकाई आत्मनिर्भर एवं स्वयत्तशासी ग्राम होगा। इन समस्त संस्थाओं की कार्यशैली का आधार पारस्परिक सहयोग एवं सहचार के आधार पर होगा, न कि कानूनी सत्ता के भय के रूप में। इस पंचायती लोकतंत्र में ग्राम पंचायत स्तर, प्रखण्ड स्तर, जिला स्तर, प्रांतीय स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका होगी। स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय, स्वशासन, अहिंसात्मक दण्ड व्यवस्था आदि मूल्य पंचायतों के संचालन हेतु प्रमुख होगी। महात्मा गांधी ऐसे समाज की स्थापना के हिमायती हैं जिसमें जाति भेद, ऊँच–नीच, वर्ग संघर्ष, अस्पृश्यता, संप्रदायवाद, भाई–भतीजावाद, गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा आदि का अभाव होगा। ऐसे समाज में न्याय, समता, स्वतंत्रता, नैतिक–धार्मिक अनुशासन, दया, सहयोग, आत्मनिर्भरता आदि का बाहुल्य होगा। उल्लेखनीय है कि भारतीय समाज की संरचना में वर्ण व्यवस्था को गांधीजी वैज्ञानिक व्यवस्था के रूप में देखते हैं। वर्ण व्यवस्था

का आधार जाति व्यवस्था से न होकर गुण और कर्म पर आधारित कर्त्तव्य पालन है। समाज में धर्म एवं नैतिक पर आधारित विविध व्यवसायों में ऊँच–नीच का कोई भेद नहीं है। रामराज के आदर्श को प्राप्त करने को प्रेरित गांधीवाद यह स्वीकार करता है कि ऐसे समतामूलक समाज में प्रत्येक स्वतः अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा। गांधी जी को कर्माधारित वर्ण व्यवस्था को स्वीकार होते हुए भी जाति प्रथा अस्वीकार हैं। आदर्श समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति होती है तथा ऐसी स्वतंत्रता में अधिकार एवं कर्त्तव्य का संतुलन होता है। यहाँ स्वतंत्रता स्वच्छन्दता न होकर आत्मनियंत्रण है।

सत्य के उपासक गांधी जी का संपूर्ण जीवन सत्य के प्रति प्रयोग है। साम्यवाद, अराजकतावाद और उदारवादी होते हुए भी हिंसा का निषेध करते हैं तथा साधन–साध्य पवित्रता को स्वीकार कर सर्वकल्याणवादी समाज की स्थापना पर बल देते हैं। गांधीवाद ऐसा साम्यवाद है जो क्रूरता, अत्याचार एवं शोषण का निषेध करते हुए आध्यात्मिक, नैतिक तथा भौतिक उत्थान से युक्त समाज की स्थापना की गवेषणा करता है। मानवता की रक्षा के लिए हिंसा नहीं अहिंसा की अववश्यकता है। शांति, प्रगति और कल्याण हेतु सत्य, अहिंसा तथा सर्वोदय के सिद्धान्त की उपादेयता सभी समाजों के लिए नितांत आवश्यक है। गांधीवादी विचार धर्म से सामंजस्य कर सकने वाले राजनीति की वकालत करता है। आर्थिक विकेन्द्रीकरण के साथ–साथ ग्राम स्वराज के रूप में सत्ता एवं राजनीति के विकेन्द्रीकरण को सर्वोदयी समाज की स्थापना के लिए आवश्यक है। पंचायत ही गाँव की व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के रूप में कार्य करेंगे।

समाज में पारम्परिक एवं आधुनिक के संतुलन पर आधारित बेहतर शिक्षा व्यवस्था का प्रसार उपादेय है। यदि साक्षरता व्यवहार में सम्मिलित न हो तो सीखा गया ज्ञान बेकार ही कहा जाएगा। सच्ची शिक्षा वही है जिससे व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मा के गुणों का चतुर्मुखी प्रगति हो सके। अतः शिक्षा समग्र व्यक्तित्व के विकास का साधन है। मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और अत्मा का संघात है और इसी संघात का चतुर्मुखी विकास ही सच्ची शिक्षा का लक्ष्य है। यदि यह कहा जाय कि गांधी जी के 'शिक्षा' का लक्ष्य लौकिक तथा पारलौकिक कल्याण है तो अतिशयोक्ति नहीं होगा। समाज में शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शाक्तियों का विकास करना है। उल्लेखनीय है कि वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद के अनुसार– ''यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः,'' दूसरे शब्दों में जो लोक–परलोक में मानव मात्र के लिए कल्याणकारी ही धर्म है। ऐसे में गाधी जी की शिक्षा महर्षि कणाद के धर्म के समान भौतिक एवं आध्यात्मिक कल्याण में लाभकारी है।

आदर्श से कर्त्तव्य की दिशा का भान होता है। यद्यपि हम आदर्श को पूर्णतया प्राप्त नही ंकर सकते फिर भी आदर्श का अनुगमन कर हम आदर्श के समीप अवश्य पहुँच सकते हैं। अतः हमें आदर्श के लिए प्रयत्न करना है। सभी को अधिकतम शुभ की प्राप्ति तभी हो सकती है जब उसे शुभ साधनों द्वारा प्राप्त किया जाय। राज्य और सरकार नैतिकता की स्थापना नहीं कर सकते क्योंकि नैतिकता तो स्वतः व्यक्ति और समाज द्वारा उत्पन्न होती है। नैतिकतापूर्ण समाज में विकास का आधार निजी हित न होकर समग्र हित होता है। सत्य, अहिंसा, समानता, सहयोग, स्वतंत्रता आदि से संपन्न नैतिक समाज का जीवन सामूहिक ही होगा, न कि व्यक्तिगत। ऐसे राज्यविहीन समाज में प्रत्येक जन अपनी योग्यतानुसार धनोत्पादन करेगा, परन्तु उसे आवश्यकतानुसार धन के रूप में परिश्रमिक प्राप्त होगा। समाज में अमीर–गरीब का अन्तर समाप्त हो जाएगा तथा व्यक्ति और समाज की पारस्परिक निर्भरता स्वतः मुखरित हो जाएगी।

गांधी जी के चिंतन का लक्ष्य हिंसा–शोषण के आधार पर स्थापित वर्तमान राज्य व्यवस्था को अहिंसात्मक साधनों द्वारा समाप्त कर एक ऐसी राज व्यवस्था की स्थापना करना है जो समाज के प्रत्येक व्यक्ति के ऐच्छिक सहयोग पर अवलम्बित हो तथा जिसका लक्ष्य सबका कल्याण हो। सर्वोदयी मूल्यों की स्थापना का तकनीकी साधन सत्याग्रह है। सत्याग्रह एक जीवन पद्धति एवं मूल्य के रूप में सत्य को मनवाने के लिए दृढ़ आग्रह करना है। सत्याग्रही में मानवीय मूल्यों की रक्षा और विकास करने के साथ–साथ प्रतिपक्ष को समान मानने की प्रवृत्ति होती है। जब सत्यग्रही सत्य के प्रति आग्रह के लिए तत्पर होता है तो वह अपने प्रतिपक्षी की आँखों से आखें मिलाकर देखता है। ऐसे में सत्याग्रही प्रतिपक्षी को न तो बड़ा समझता है और न ही छोटा। सत्याग्रही की शक्ति अहिंसा है। अहिंसा द्वारा संघर्ष का समाधान इस प्रकार हो जाता है कि दोनों पक्षों में किसी की भी पराजय नहीं होती है और अन्ततः दोनों पक्षों में प्रेम और सद्भाव का वातावरण परिलक्षित हो जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि परिवर्तन का आधार व्यक्ति और समाज है, न कि राज्य। नैतिकतापूर्ण व्यक्ति का समाज ही अपने अधिकारों तथा दायित्वों के प्रति सजग रहकर राज्य को कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर प्ररित कर सकता है। सत्य तो यह है कि यदि व्यक्ति तथा समाज अपने दायित्वों एवं अधिकारों के प्रति सजग नहीं हैं तो लोकत्रांतिक राज्य भी नागरिक अधिकारों को रौंद देने में सक्षम हो जाता है। सत्याग्रही स्वयं को राजनीतिक शक्ति से दूर रखकर राज सत्ता को समाज के प्रति उत्तरदायी बनवाने का अहिंसात्मक प्रयास करता है।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी जी का विचार परम्परावादी होते हुए भी रूढ़िवादी नहीं है। रूढ़िवाद में अंधविश्वास की प्रधानता होती है, परन्तु गांधी जी के परम्परावादी विचार के साथ पर्याप्त तर्कबल है। दूसरे शब्दों में परम्परा के विचार का आधार अतीत और वर्तमान न होकर सनातनी मूल्यों के प्रभाव का अजस्र प्रवाह है। देश को आधुनिक बनाने में रूढ़िमुक्त परम्परा को साधनस्वरूप स्वीकार करने वाले गांधी जी का लक्ष्य एक ऐसे

समाज की स्थापना करना था, जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारा के मूल्यों को साकार किया जा सके। अतः सनातनी मूल्यों पर आधारित परम्परा आधुनिकता के मार्ग को प्रशस्त ही करेगा। आज के समाज में कल्याणकारी मूल्यों का स्थान असत्य, अवसरवाद, धोखा, लालच व स्वार्थपरता जैसे संकीर्ण विचारों द्वारा लिया जा रहा है। विश्व की शक्तियाँ शस्त्रीकरण की होड़ में लगी हुई है। ऐसे में विश्व शांति एवं मानवीय मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए आज गांधीवादी दर्शन की उपादेयता पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। गांधी जी धर्म व नैतिकता में अटूट विश्वास रखते हुए कहते हैं कि धर्म व राजनीति का सह–अस्तित्व ही समाज की बेहतरी के लिए सुदृढ़ नींव तैयार कर सकता है। पुनश्च, साधन व साध्य दोनों शुद्ध होनी चाहिए क्योंकि साधन व साध्य में बीज व पेड़ के जैसा संबंध होता है। दूषित बीज से स्वस्थ पेड़ की उम्मीद करना निरर्थक है। गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। सत्य के लिए संघर्ष में हिंसा के उपयोग किए ही सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. नवजीवन (1926), महात्मा गांधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'नवजीवन', अहमदाबादः नवजीवन पब्लिसिंग हाउस।

2. गांधी, महात्मा (1926), यंग इण्डिया, मद्रासः एस गनेशन।

3. नवजीवन (1927), महात्मा गांधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'नवजीवन', अहमदाबादः नवजीवन पब्लिसिंग हाउस।

4. यंग इंडिया (1928), महात्मा गांधी द्वारा संपादित पत्र/पत्रिका 'यंग इंडिया', दिनांक 02 अगस्त 1928 को प्रकाशित।

5. गांधी, मोहनदास करमचंद (1950), सच्ची शिक्षा (अनुवादकः राम नारायण चौधरी), अहमदाबादः नवजीवन पब्लिसिंग हाउस।

6. बोस, एन.के (1957), सेलेक्शन्स फ्राम गांधी, अहमदाबादः नवजीवन पब्लिसिंग हाउस।

7. गांधी, एम.के. (1968), दी स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरीमेंट्स विद ट्रुथः ऐन ऑटोबायोग्राफी, अहमदाबादः नवजीवन पब्लिसिंग हाउस।

8. पाठक, दिवाकर (1992), भारतीय नीतिशास्त्र, दिल्लीः मॉडल टाउन।

9. मिश्र, एच.एन. (2000), समाज दर्शनः सैद्धान्तिक एवं समस्यात्मक विवेचन, इलाहाबादः शेखर प्रकाशन।

10. वर्मा, एस.पी. (2007), आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, नोएडाः विकास पब्लिकेशन।

11. श्रीवास्तव, रश्मि (2018), महात्मा गांधी का शिक्षा–चिंतन, नई दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।

12. बंद्योपाध्याय, अनु (2020), बहुरूप गांधी, नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्।